पाठ 2: राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

1. कवि परिचय (Author Introduction)

- **कवि का नाम:** गोस्वामी **तुलसीदास** (भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के सिरमौर कवि)।
- **प्रमुख रचनाएँ:** रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली।
- **प्रसंग स्रोत:** यह अंश महाकाव्य 'रामचरितमानस' के **'बालकांड'** से लिया गया है।

2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह के लिए स्वयंवर का आयोजन किया था। शर्त यह थी कि जो शिवजी के भारी धनुष (पिनाक) पर प्रत्यंचा चढ़ाएगा, उसी से सीता का विवाह होगा। श्रीराम ने जैसे ही धनुष उठाया, वह टूट गया। शिवजी के परम भक्त मुनि परशुराम को जब यह बात पता चली, तो वे अत्यंत क्रोधित होकर सभा में आए और धनुष तोड़ने वाले को मारने की धमकी देने लगे। इसी अवसर पर श्रीराम, लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो बातचीत हुई, वही इस पाठ का विषय है।

3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

राम की विनम्रता: परशुराम के क्रोधित होने पर श्रीराम अत्यंत विनम्रता से कहते हैं कि शिवजी का धनुष तोड़ने वाला आपका कोई दास ही होगा। लेकिन परशुराम कहते हैं कि सेवक वह होता है जो सेवा करे, यह तो शत्रु का काम है।
लक्ष्मण का व्यंग्य: लक्ष्मण व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि बचपन में तो हमने बहुत सी धनुहियाँ तोड़ी हैं, तब तो आपने क्रोध नहीं किया। इस पुराने धनुष से इतना लगाव क्यों है? परशुराम क्रोधित होकर अपने भयंकर फरसे को दिखाते हैं और अपने क्षत्रिय-कुल-विनाशक (क्षत्रियों का नाश करने वाले) रूप का बखान करते हैं।
लक्ष्मण का तर्क: लक्ष्मण कहते हैं कि हम कोई 'कुम्हड़े की बतिया' (सीताफल का कमज़ोर फूल) नहीं हैं जो तर्जनी उँगली देखते ही कुम्हला जाएँ। वे याद दिलाते हैं कि एक सच्चा वीर युद्ध भूमि में अपनी शूरवीरता दिखाता है, अपने मुँह से अपनी बड़ाई नहीं करता। शूरवीर देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय पर शस्त्र नहीं उठाते।
परशुराम का विश्वामित्र से संवाद: परशुराम गुरु विश्वामित्र से कहते हैं कि इस बालक (लक्ष्मण) को रोक लो, वरना मेरे फरसे से मारा जाएगा। विश्वामित्र मन ही मन हँसते हैं कि मुनि परशुराम राम-लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय समझ रहे हैं, जबकि ये तो लोहे की बनी मज़बूत तलवार हैं।
राम द्वारा शांति: अंत में जब लक्ष्मण के व्यंग्य बाणों से परशुराम के क्रोध की आग बहुत भड़क उठती है, तब श्रीराम जल के समान शीतल और मधुर वचन बोलकर परशुराम के क्रोध को शांत करते हैं।

4. मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण (Character Sketches)

- **श्रीराम:** अत्यंत विनम्र, शीलवान, मर्यादा पुरुषोत्तम, शांत और बड़ों का सम्मान करने वाले। उनकी वाणी जल के समान शीतल है।
- **लक्ष्मण:** उग्र, निडर, स्पष्टवादी, तार्किक और वाक्पटु (बोलने में चतुर)। वे अन्याय का तुरंत विरोध करते हैं और व्यंग्य करने में माहिर हैं।
- **परशुराम:** अत्यंत क्रोधी, अभिमानी, शिवजी के परम भक्त और बाल ब्रह्मचारी। वे अपनी प्रशंसा स्वयं करते हैं और बात-बात पर अपना फरसा दिखाते हैं।

5. काव्यगत एवं साहित्यिक विशेषताएँ

- **भाषा:** साहित्यिक **अवधी भाषा** का उत्कृष्ट प्रयोग।
- **छंद: चौपाई** और **दोहा** छंद।
- **रस:** मुख्य रूप से **रौद्र रस** (परशुराम का क्रोध) और **वीर रस** (लक्ष्मण का साहस)। अंत में शांत रस।
- **अलंकार:**
  - **अनुप्रास अलंकार:** 'बालकु बोलि बधौ नहिं तोही'।
  - **उपमा अलंकार:** 'सहसबाहु सम सो रिपु मोरा'।
  - **रूपक अलंकार:** 'भानुबंस राकेस कलंकू'।
- **शैली:** व्यंग्यात्मक और ओजपूर्ण संवाद शैली।

6. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

इस प्रसंग के माध्यम से तुलसीदास जी यह संदेश देते हैं कि शक्ति और साहस के साथ यदि **विनम्रता** हो, तो वह व्यक्ति को महान बनाती है। परशुराम के पास शक्ति थी लेकिन विनम्रता नहीं, जिससे वे उपहास का पात्र बने। वहीं श्रीराम के पास असीम शक्ति के साथ-साथ अत्यंत विनम्रता थी, जिससे उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थिति (परशुराम के क्रोध) पर विजय प्राप्त की।

Scholarbit

7. महत्त्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **कुम्हड़बतिया (सीताफल का कमज़ोर फूल):** इसका प्रयोग लक्ष्मण ने कमज़ोर और डरपोक व्यक्ति के लिए किया है, जो उँगली दिखाने से डर जाए।
- **गाधिसूनु:** महर्षि विश्वामित्र को कहा गया है।
- **अयमय खाँड़ और ऊखमय खाँड़:** राम-लक्ष्मण को लोहे की खाँड़ (तलवार) कहा गया है, न कि गन्ने की रस की खाँड़ जो पिघल जाए।
- **सच्चे वीर की पहचान:** वह युद्ध के मैदान में वीरता दिखाता है, डींगें नहीं हाँकता।
- **क्षत्रियों के नियम:** वे देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय पर हथियार नहीं उठाते, क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और हारने से अपयश होता है।

Schorbit